स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - द्वितीय खण्ड - डॉ० मुन्ना साह
(तृतीय पत्र - आधुनिक हिन्दी काव्य) हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

अंधायुग - धर्मवीर भारती

अंधायुग एक गीतिनाट्य काव्य है। इसका प्रकाशन सन 1955 ई० में हुआ था। इसका कथानक महाभारत युद्ध के अंतिम दिन पर आधारित है। महाभारत के अठारहवाँ दिन आसमान काला दिख रहा था। क्योंकि आसमान में गिद्ध मँडरा रहे थे। प्रहरियों ने देखा तो घबरा कर विदुर के पास गए। तो विदुर ने कहा, यह तो बहुत बड़ा अपशकुन है। वे महाराज से बताने के उद्देश्य से उनके पास गए और अभिवादन किया। दोनों में जो संवाद हुआ वह इस प्रकार था -

"विदुर - महाराज चुप क्यों हैं इतने आप
माता गान्धारी भी मौन हैं!

धृतराष्ट्र - विदुर!
जीवन में प्रथम बार
आज मुझे आशंका व्यापी है।

विदुर - आशंका?
आपको जो व्यापी है आज
वह वर्षों पहले हिला गयी थी सबको

धृतराष्ट्र - पहले पर कभी भी तुमने यह नहीं कहा....

विदुर - भीष्म ने कहा था,
गुरु द्रोण ने कहा था,
इसी अंतःपुर में
आकर कृष्ण ने कहा था -
मर्यादा मत तोड़ो
तोड़ी हुई मर्यादा
कुचले हुए अजगर-सी
कुंजलिका में कौरव-वंश को लपेट कर
सूखी लकड़ी-सा तोड़ डालेगी।"

विदुर ने धृतराष्ट्र की हर एक बात को प्रतिउत्तर दिया और विस्मृति दूर की